Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

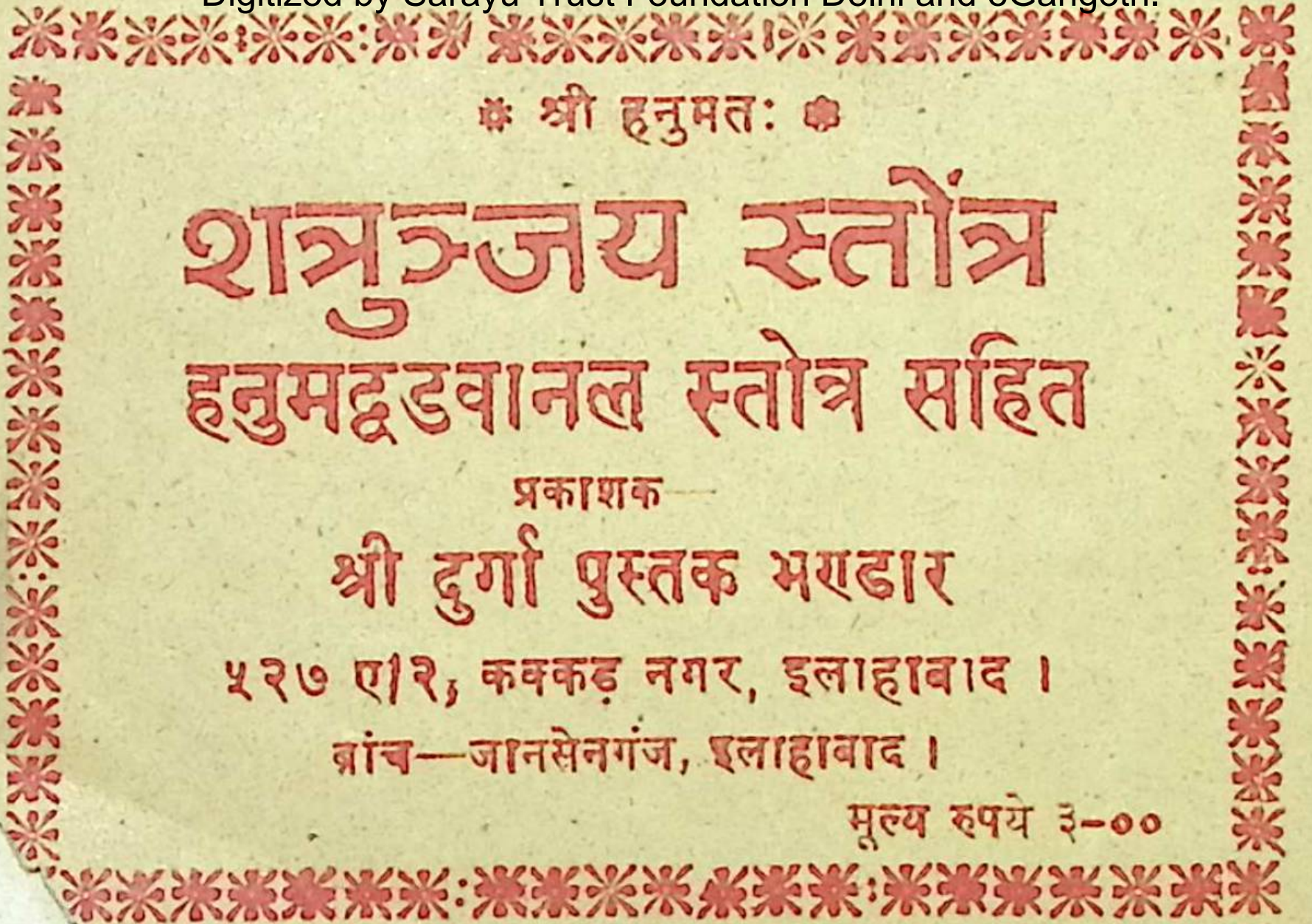

* श्री हनुमतः *

शत्रुञ्जय स्तोत्र

हनुमद्वडवानल स्तोत्र सहित

प्रकाशक

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए/२, ककड़ नगर, इलाहाबाद ।

ब्रांच—जानसेनगंज, इलाहाबाद ।

मूल्य रुपये ३-००

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❊ श्री हनुमतः ❊

शत्रुञ्जय स्तोत्र

हनुमद्वडवानल स्तोत्र सहित

सम्पादक : संशोधकश्च

कर्मकाण्डि मालवीय, पं० लक्ष्मीदत्त शास्त्री

संस्कृत प्रधानाध्यापक गवर्नमेन्ट हायर

पूजा-पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भंडार दूरभाष 3275344
194, दरीबा कलां, दिल्ली 110006

रा।

[मूल्य रु० ३-००

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर (दरियाबाद), इलाहाबाद।

शाखा— जानसेनगंज, इलाहाबाद।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पण प्रस्तावना

पाठकैर्मत्कृत भक्ति टीका युक्त प्रकाशित श्री दुर्गा सप्तशत्या विहितेन पूर्णादरेण समुत्साहितः, पृथक्कुत्राप्यद्या-वध्य प्रकाशितं हनुमल्लाङ्गूलास्त्रापरपर्यायं प्रयागीय पूजनीय निज जनक पण्डितराज मालवीय गोपालदत्त शास्त्रि चतुर्वेदितोऽधिगतम्, आभीक्ष्ण्येन सपत्न निपातनावलोकित प्रत्यक्ष चमत्कृतिप्रकाशकवयं लालजी वर्म प्रकाशितम्, साङ्गकरन्यस्ति, रघुनन्दन दूत पवननन्दनस्य शत्रूञ्जयाख्य स्तोत्र कुसुममिदम् यथामति संशोध्य संपाद्य, निर्मन्तुं मानव निपातनायैतत्स्तवन प्रसून प्रयोगाभावाय पाठकान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संप्रार्थ्य, भविष्यत्यनेहसि विविध क्षेत्र सम्भावित स्व समस्त प्रतिद्वन्दि द्विषत्संदमन प्रसाद लब्धये भगवदाञ्जनेयस्य जन्माहे तच्चरणयोः सादरं समर्पयति।

गवर्नमेण्ट हायर
सेकेण्डरी स्कूल
आगरा।

मालवीय लक्ष्मीदत्त शास्त्री
कार्तिक हनुमज्जयन्ती
मालव सं० २००५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

* अथ *

शत्रुञ्जय स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री हनुमल्लाङ्गूल शत्रुञ्जय स्तोत्र मंत्रस्य ईश्वर ऋषिरनुष्टुप छन्दः, श्री हनुमान् रुद्रो देवता हं बीजं स्वाहा शक्तिः, हा हा हा इति कीलकम् मम्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्वारि क्षयार्थे जपे विनियोगः ।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः । ॐ ह्रां आंजनेयाय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्रीं रामदूताय तर्जनीभ्यां नमः । ॐ ह्रूं अक्षयकुमारविध्वंसकाय मध्यमाभ्यां नमः । ॐ ह्रैं लङ्का-विदाहकाय अनामिकाभ्यां नमः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ ह्रौं रुद्रावताराय नमः कनिष्ठि-
काभ्यां नमः। ॐ ह्रः सकलरिपु
संहारणाय करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।
ॐ ह्रां आंजनेयाय हृदयाय नमः।
ॐ ह्रीं रामदूताय शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं अक्षयकुमार विध्वंसकाय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिखायै वषट्। ॐ ह्रैं लंका विदाह-
काय कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं रुद्रा-
वताराय नेत्राभ्यां वौषट्। ॐ ह्रः
सकलरिपु संहारणाय अस्त्राय फट्।

ॐ ऐं श्रीं हां हीं हूं हैं हौं ह्रः
स्फें स्वफें हस्रौं ह स्वफें हस्रौं नमो

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनुमते त्रैलोक्याक्रमण पराक्रम
श्रीराम भक्त मम परस्य च सर्व
शत्रून् चतुर्वर्ण सम्भवान् पुंस्त्री-
नपुंसकान् भूत भविष्यद्वर्तमानान्
दूरस्थान समीपस्थान् नाना नामधे-
यान् नाना संकर जातीयान् कलत्र
पुत्र मित्र भृत्य वन्धु सुहृत्समेतान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रभुशक्तिसहितान् धनधान्यादि संपत्तियुतान् राज्ञो राजसेवकान् मंत्रि सचिव सखीनात्यन्तिकान् क्षणेन त्वरया एतद्दिनावधि नानोपायैर्मारय २ शस्त्रैश्छेदय २ अग्निना ज्वालय २ दाहय २ अक्षयकुमारवत् पादतलाक्रमणेन् आत्रोटय २ घातय २

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भक्तजनवत्सल सीता शोकाप-
हारक सर्वत्र मामेनं च रक्ष २ हा
हा हा हुँ हुँ हुँ भूत संघैः सह
भक्षय २ क्रुद्ध चेतसा नखैर्विदारय
२ दशादस्मादुच्चाटय २ पिशाचवद्
भ्रंशय २ घे घे घे हुँ हुँ हुँ फट्
स्वाहा ॥ ॐ नमो भगवते श्री

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हनुमते महाबल पराक्रमाय
महाविपत्ति निवारणाय भक्तजन
मनः संकल्पनाय कल्पद्रुमाय
दुष्टजनमनोरथस्तम्भनाय प्रभञ्जन
प्राणप्रियाय स्वाहा ॥

श्रीमन्तं हनुमन्तमात्त रिपुभिद्-
भूभृत्तनुभाजितं । वलगद्वालधि वृद्-

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैरिनिचयं चामीकराद्रिप्रभम् ॥
रोषारक्त पिशंगनेत्र नलिनभ्रूभंग संग
स्फुरत्। प्रोद्यच्चण्ड मयूख मण्डल
मुखम् दुःखापहम् दुःखिनाम् ॥ १ ॥
कौपीनं कटि सूत्र मौञ्ज्यजिन
युग्देहं विदेहात्मजा। प्राणाधीश

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पदारविन्द निहतं स्वान्तम् कृतान्तं द्विषाम् ॥ ध्यात्वैवं समराङ्गणे स्थितमथानीय स्वहृत्पङ्कजे । संपूज्याखिल पूजनोक्तविधिना संप्रार्थयेत्प्रार्थितम् ॥ २ ॥ ॐ हनू-मान्नञ्जनी सूनो महाबल पराक्रम । लोललाङ्गूल पातेनममारातीन्नि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पातय ॥ ३ ॥ अक्षक्षपण पिङ्गाक्ष-
दितिजा सुक्षयंकर। लोललाङ्-
गूल०॥४॥ मर्कटाधिपमार्तण्ड मण्डल
ग्रासकारक। लोल० ॥ ५ ॥ रुद्राव-
तार संसार दुःख भारापहारक।
लोल० ॥ ६ ॥ श्रीरामचरणाम्भोज
मधुपायित मानस। लोल० ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बालिकालरदक्रान्त सुग्रीवोन्मोचन
प्रभो। लोल० ॥ ८ ॥ सीता विरह
वारीशमग्नि सीतेश तारक।
लोल० ॥ ९ ॥ रक्षोराज प्रतापाग्नि
दह्यमान जगद्धित। लोल० ॥ १० ॥
ग्रस्ताशेष जगत्स्वास्थ्य राक्षसम्भो-
धिमन्दर। लोल० ॥११॥ पुच्छगुच्छ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्फुरद्धूम् ध्वजदग्धनिकेतन।
लोल० ॥१२॥ जगन्मनो दुरुल्लंघ्य
पारावार विलंघन। लोल० ॥१३॥
स्मृति मात्र समस्तेष्ट पूरक!
प्रणत प्रिय। लोल० ॥१४॥ रात्रिचर
चमूराशि कर्तनैक विकर्तन।
लोल०॥१५॥ जानकी जानकीज्यानि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रेमपात्र ! परंतप । लोल० ॥ १६ ॥
भीमादिक महावीर वीर वेशादि
तारक । लोल० ॥ १७ ॥ वैदेही
विरहाक्रान्त रामरोषैकविग्रह ।
लोल० ॥ १८ ॥ वज्राङ्ग-नखदंष्ट्रेश
वज्रिवक्त्रावगुण्ठन् ॥ लोल० ॥ २० ॥
लक्ष्मण प्राण संत्राणत्राता स्तीक्ष्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करान्वय। लोल० ॥ २१ ॥ रामधि
विप्रयोगार्त भरताद्यार्ति नाशन।
लोल० ॥२२॥ द्रोणाचलसमुत्क्षेप
समुत्क्षिप्तारि वैभव। लोल० ॥२३॥
सीताशीर्वाद सम्पन्न समस्ताभय-
वांछित। लोल० ॥ २४ ॥ वातपित्त
कफश्वास ज्वरादि व्याधिनाशन।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोल० ॥२५॥ ॐ इत्येवमश्वत्थ तलोपविष्टः शत्रुञ्जयं नाम पठेत्स्तवं यः। स शीघ्रमेवास्तसमस्तशत्रुः प्रमोदते मारुतजप्रसादात् ॥२६॥

॥ इति हनुमच्छत्रुञ्जय स्तोत्रम् ॥

❊ समाप्तम् ❊

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

❋ हनुमद्वडवानलस्तोत्रम् ❋

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्रीहनुमान्वडवानलस्तोत्र मन्त्रस्य श्री रामचन्द्र ऋषिः श्रीवडवानलहनुमान् देवता मम समस्तरोगप्रशमनार्थं आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं समस्त-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पापक्षयार्थं सीतारामचन्द्रप्रीत्यर्थं हनु-
मद्बडवानलस्तोत्रजपमहं करिष्ये।
ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते श्रीमहा-
हनुमते प्रकट पराक्रम सकलदिङ्
मण्डल-यशोतितानधवलीकृत-जगत्
त्रितय-वज्रदेह रुद्रावतार लङ्क-
पुरीदहन-उमा-अर्गलमन्त्र उदधि-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बन्धन दशशिरः कृतान्तक सीता-
श्वसन वायुपुत्र अञ्जनीगर्भसंभूत
श्रीरामलक्ष्मणानन्दकर तपिसैन्य-
प्रकार सुग्रीवसाह्यरणपर्वतोत्पाटन
कुमारब्रह्मचारिन् गभीर नाद-
सर्वपापग्रहवारणसर्वज्वरोच्चाटन
डाकिनीविध्वंसन ॐ ह्रां ह्रीं ॐ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमो भगवते महावीरवीराय सर्व-
दुःखनिवारणाय ग्रहमण्डल सर्वभूत-
मण्डलसर्वपिशाचमण्डलोच्चाटन-
भूतज्वर एकाहिकज्वरद्व्याहिकज्वर
त्र्याहिकज्वर चातुर्थिकज्वर संताप
ज्वरविषमज्वरतापज्वर माहेश्वर
वैष्णवज्वरान्छिन्धि छिन्धि यक्ष-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ब्रह्मराक्षस भूत-प्रेतपिशाचान् उच्चा-
टय उच्चाटय। ॐ ह्रां श्रीं ॐ नमो
भगवते श्रीमहाहनुमते ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं
ह्रैं ह्रौं ह्रः आं हां हां हां ह्रां
औं सौं एहि एहि एहि ॐ हं ॐ
हं ॐ हं ॐ नमो भगवते श्रीमहा-
हनुमते श्रवणचक्षुर्भूतानां शाकिनी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

डाकिनीनां विषमदुष्टानां सर्वविषं हर हर आकाशभुवनं भेदय भेदय छेदय छेदय मारय मारय शोषय शोषय मोहय मोहय ज्वालय ज्वालय प्रहारय प्रहारय सकलमायां भेदय भेदय। ॐ ह्रां ह्रीं ॐ नमो भगवते महाहनुमतेसर्वग्रहोच्चाटन परबलं क्षोभय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्षोभय सकल बन्धनमोक्षणं कुरु कुरु शिरःशूलगुल्मशूल सर्वशूलान्निर्मूलय निर्मूलय नागपाशानन्तवासुकितक्षक कर्कोटकालियान् यक्षकुलजगत रात्रि-ञ्चर-दिवाचरसर्पान्निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा। राजभय-चौरभय-परमन्त्र-परयन्त्र परतन्त्र-परविद्याश्छेदय छेदय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्वमंत्र स्वयन्त्रस्वतन्त्रकाविद्याः
प्रकटय-प्रकटय सर्वारिष्टान्नाशय
नाशय सर्वशत्रून्नाशय नाशय
असाध्यं साधय साधय हुँ
फट् स्वाहा।

इति विभीषणकृतं हनुमद्वडवानल
स्तोत्रम संपूर्णम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कामाख्या उपासना

अर्थात् कामाख्या सिद्धि

यह पुस्तक कामाक्षा देवी की सिद्धि में अत्यन्त सहायक है। इसमें देवी जी की उत्पत्ति का वर्णन, पूजन, प्रार्थना, प्राण प्रतिष्ठा तथा कामाक्षा देवी का अनुष्ठान व शीघ्र सिद्धि प्रयोग दिया गया है। इसकी मदद से आप शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मूल्य केवल रु० ३०-००, डाकखर्च अलग।

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए/२, कक्कड़नगर (दरियाबाद), इलाहाबाद।

शाखा—जानसेनगंज, इलाहाबाद।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रामायण भाषा टीका बड़ी

(आठों काण्ड सन्त संजीवनी टीका सहित)

यह बाजार में बिकने वाली सभी रामायणों में सबसे अच्छी सस्ती और सुन्दर हैं। इसकी टीका बहुत सरल सुन्दर तथा रोचक है, मूल्य रु० २०१-००, रामयण प्रेमियों के सुविधार्थ इसका मूल्य रु० १५१-०० मात्र, डाक खर्च अलग है।

रामायण भाषा टीका वृहदाकार रु० ५००-००

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर (दरियाबाद), इलाहाबाद।

शाखा— जानसेनगंज, इलाहाबाद।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वशीकरण मन्त्र

इस पुस्तक की मदद से चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर मन चाहा काम ले सकते हैं। आकर्षण सुरमा बनाने की क्रिया, राज दरबार में विजय पाना, लड़ाई में दुश्मन को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्रों को यन्त्र द्वारा अपने देश में बुलाना, बातचीत करना आदि बातों का वर्णन किया गया है। मूल्य केवल रुपया २०-००, डाक व्यय अलग है।

प्रकाशक—

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर (दरियाबाद), इलाहाबाद।

शाखा— जानसेनगंज, इलाहाबाद।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्री रामसुन्दर दास रचित

चालीस चालीसा पाठ संग्रह

सभी देवी और देवताओं के चरित्र और कथाओं का यह वृहद् संग्रह चालीस चालीसा पाठ संग्रह के रूप में लेखक ने आपके सामने प्रस्तुत किया है। हिन्दी में पूजा पाठ करने के लिए इससे अच्छी पुस्तक आज तक नहीं छपी थी। इसकी सभी चौपाइयाँ पास रखने से यन्त्रवत्, पाठ करने से मन्त्रवत् तथा शीघ्र कार्य सिद्धि करने में तन्त्रवत् प्रभाव रखती है। इसके पाठ मात्र से किसी भी देवी देवता को आप प्रसन्न करके उनसे मनोवांछित वरदान प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य सजिल्द पुस्तक का केवल ३० रु० मात्र, प्रेमी सज्जनों के लिए रियायती मूल्य रु० २५-०० मात्र, डाक व्यय अलग।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुख सागर

श्रीमद्भागवत पुराण बारहों स्कन्ध बहुत सुन्दर सरल तथा रोचक हिन्दी भाषा में तैयार किया गया है। भगवान श्री कृष्ण के चरित्रों का बड़ी सुन्दर रीति से सरल भाषा में वर्णन किया गया है। कम पढ़े लोगों के लिये भी उपयोगी है। रियायती मूल्य रु० १५१-०० मात्र, डाक खर्च अलग।

हर प्रकार की पुस्तकें मंगाने का पता—

प्रकाशक— दुर्गा पुस्तक भण्डार,

५२७ ए/२ कक्कड़ नगर, (दरियाबाद), इलाहाबाद।

शाखा—जानसेनगंज, इलाहाबाद।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection